राजस्थानी कलाकार श्री परमानन्द चोयल

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

समकालीन भारतीय राजस्थानी कलाकार के रूप में, श्री चोयल जी अविस्मरणीय संस्कारिक पृष्ठभूमि में कला जगत के चिर–नवीन मूल्यों को स्थापित करने वाले कलाकार के रूप में जाने जाते है। राजस्थान के कलाकारों में श्री चोयल का विशिष्ट स्थान है, जिन्होंने कला की गहरी समझ के लिये निरन्तर लड़ाई लड़ी और एक शिक्षक तथा कलाकार के रूप में परमानन्द चोयल का समकालीन भारतीय कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रारम्भ से ही प्रतिभा सम्पन्न और कलात्मक वातावरण, जिसमें अपनी माँ को आंगन मांडते देखते और प्रेरित होते तथा रंगों के खिलवाड़ के साथ ही अपने मनोभावों को व्यक्त करने का माध्यम बन गयी, तथा अपने गुरूओं, शुभेच्छुओं से प्रेरित रहे। श्री शैलेन्द्र नाथ डे तथा श्री राम गोपाल विजय वर्गीय उनके प्रारम्भिक गुरू रहे। ये वो कलाकार थे जिन्होंने राजस्थान में भारतीय कला पुर्नजागरण के विचारों को प्रवाहित किया। श्री चोयल लन्दन में चित्रकला के विशेष अध्ययन हेतु स्लेड स्कूल आफ फाइन आर्ट प्रवेश लिया, जहाँ प्रो0 नटल स्मिथ व टाउन लैण्ड का सानिध्य प्राप्त हुआ। उनकी कृतियों में धीरे–धीरे बदलाव आने लगा। स्पेस बोध चेतने लगा। बाश, टेम्परा, जलरंग, तैलरंग सभी पद्धतियों में इन्होंने प्राकृतिक दृश्यों आकाश, पृथ्वी, पर्वत, पठार, नदी नाले और उनके परिप्रेक्ष्य में आकृतियां उभारी है। उन्होंने पौराणिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर भी अनुसंधान किया है और उनके चित्रों में यह प्रभाव दृष्टव्य है किन्तु बाद में विदेशी कला परम्पराओं के प्रभाव ने उन्हें यथार्थवादी से अभिव्यंजनावादी एवं वस्तु निरपेक्ष बना दिया। इनके चित्रों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव परिलक्षित होता है। जिसमें मानव संवेदनाओं का सुक्ष्म विश्लेषण दर्शाया गया है। 'भिखारी' की दयनीय स्थिति का बोधक इनका सुप्रसिद्ध चित्र ऐसे ही सूक्ष्म तथ्यों का उद्घाटन करता है विषय वस्तु और निरूपण में एक सुखद समन्वय देखा जा सकता है। आकृतियों में गतिशीलता है और दृश्य रूपाकरों में रंगों का तालमेल है। वे एक दूसरे में घुली–मिली है। जो नये अर्थ की सूचक है।

इसी भावकुक परकता के कारण उनका झुकाव डच कलाकार वान गॉग की तरफ था उनके जीवन और चित्रों से बहुत प्रभावित थे, जो श्री चोयल के चित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है उस समय न केवल वान गॉग से ही चित्र बनाये बल्कि उन पर एकांकी लेख लिखे, और नाटक खेले, तथा उनसे प्रभावित अनुप्रेरणा से स्केच भी बनाएं। जो एक थोथा भावकुता थी, एक भावुक बहाव था। ''झोपड़ी पर कौवे'' वान गॉग के चित्र ''धान के खेत पर कैवे'' का प्रतिगामी था, वान गॉग चोयल की मनस्थितियो पर गहरा प्रभाव था।

यद्यपि संयोजन में स्पष्टता सूक्ष्म निरूपण व कौशल का जादू था पर कलात्मक विषद्ता अभी धुंधली ही थी। यह एक संक्रमण काल था जब कलाकार प्रभाववाद और अभिव्यंजनावाद की बीच द्वन्दरत था, भैसों के

चित्रण में भैंसो के समूह का एक लयात्क संयोजन गतियां और संरचना थी, जो चित्र को जीवन्त बनाती थी। 1961 तक कलाकार मोटे रंगों को ब्रश व पैलेट नाइफ में समेट कर चित्रण करते थे। टुटी रेखायें, बिखरे आकार टेक्सचर से भरे तल कैनवास पर उभर रहा था। जहाँ अचेतन मन बनते बिगड़ते रहे थे। और कलाकार स्पेस से जुड़े पैटर्न के प्रति सजग नहीं था, लन्दन के स्केचों के जीवन के उहापोह झलकता है, आकृतियां टुट गई है, अनाकर्षक विकृत आकृतियों में गहरी मानवीय संवेदनाओं का बोध होता है। विषय जीवन के के इर्ग–गिर्द बटोरने की प्रवृत्ति अचानक नहीं थी, लगातार स्वाभाविक रूप आयी सृजनशील स्वयं स्फूर्त अभिव्यक्ति थी। लन्दन से वापस लौटने के पश्चात उनके पैटर्न में धीरे–धीरे बदलाव आने लगा, स्पेस बोध चेतने लगा, भावपरक आकृतियाँ छाने लगी, जब कलाकार का मकसद स्पेस की गहराइयों में पैठना था, खासकर 'फाउन्टेन पेन' व 'लन्दन में वर्षा' दो प्रतिनिधि चित्रों में पहली बार स्पेस चेतना स्पष्ट हुयी जो 1967 तक कायम रही। 1968–69 के आसपास उनके चित्रों में चमकीले रंगों के विशिष्ट पैटर्न उभरने लगे और इनके तैल रंगों की तरह तरल पारदर्शन रूप में बहाया गया, यह तकनीक लन्दन से अर्जित की गई थी जो जल रंग की तरह तकनीक था और अत्यधिक जल में चित्रण करने के कारण उसका प्रभाव था, यह तकनीक उनके लन्दन में बनाये पोट्रेट और उदयपुर में बनाये पोट्रेट में भी किया गया था। यह प्रभावशाली ढंग से उनके काम में छाया रहा।

दिल के खतरनाक दौरे से उबर पाने पर चित्रमाला बनाये गये, वह टुटन आदमी औरत सभी के साथ कलाकार की गहरी संवेदना से जुड़ा हुआ था और जीवन दर्शन में एक गहरा मोड़ आया और विषाद की छाया भर दी। इसी समय खण्ड–खण्ड मनवाकार इसी मनःस्थिति के परिचायक है, जो भीतर के छटपटाते मन अभिव्यक्त होने को बेकरार नजर आता है, परम्परावादी, यर्थाथवादी, प्रभाववादी, अभिव्यंजनवादी और नितान्त नव्यवादी के रूप में इन्होंने भिन्न भिन्न प्रयोग किये। किन्तु अन्तर्भेदी दृष्टि से सत्य को टटोलना इनका सदा ध्येय रहा है। तन मन की स्वस्थता के पश्चात नई रंगों के उज्जवल उभार के आचरण में अतीत का विषाद घुल गया, अब चोयल जी के चित्रों में आन्तरिक उन्मन्तता व गति आ गयी, चित्रों में नारी आकृति तथा भैंसों का अह्ल्लाद से उद्धेलित हो गया उठा, सौन्दर्य के साथ मानवीय कार्य–कलाप उजागर हुए, श्री चोयल परम्परावाद के साथ–साथ आधुनिकतावाद के कायल थे, जिनका समन्वित प्रभाव इनके कृतिव में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। राजस्थान के किलों, छतरियों मेहराबों, टुटी दीवारों और आम आदमी को चोयल जी ने अपनी कला में एक विशिष्ट पहचान दी है। जब देश के बड़े कलाकार हाथी, घोड़े बना रहे थे तो चोयल जी ने भैंसों के अविष्मरणीय चित्र बनाये।

संक्षेप में हम कह सकते है कि चोयल जी ने जिस लगन के साथ भारतीय ग्राम्य–जीवन को दर्शाया और प्रत्येक सूक्ष्मताओं का आस्वादन किया वह अनुकरणीय है। एक सही कलाकार के लिए अपनी सृजनात्मक आवश्यकताओं को ढूंढ़ पाना और पूरी तरह से उसमें एकीकृत हो जाना ही सब कुछ है, चोयल जी के चित्रों में हम संयोजन, रेखांकन की मजबूत पकड़, संगीत की ध्वनि के समान स्वच्छ संवेदनशील रंगों का अनन्त विस्तार पाते है। इनक चित्र समानरूप से कलाकारो एवं सामान्य के हृदय को छूता है तथा उन्हें एक दूसरे के करीब लाता है।

श्री चोयल जी आज हमारे बीच नहीं है। उनका जीवन कला के लिए उत्सर्ग हुआ कोई विशेष सन्देश देना उनका ध्येय नहीं अपितु अपने इर्द–गिर्द बिखरे जीवन्त सौन्दर्य को अपने सृजन में समेटना ही उनका कर्म रहा है। उन्होंने समय–समय पर परिस्थितियों एवं मनःस्थितियों के

अनुरूप कार्य किया। श्री चोयल आध्यापक के रूप में भी उतने ही सक्षम और सफल रहे है, जितने कलाकार के रूप में। राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा समय–समय पर आयोजित कला प्रदर्शनियों में भाग लेते रहे और बोर्ड के सदस्य भी रहे तथा अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्हें विशेषज्ञ के रूप में देश के विभिन्न स्थानों पर आमंत्रित भी किया गया था, जिसमें वार्ता, डिमांट्रेशन इत्यादीमें भागीदारी रही, इसके अतिरिक्त कई प्रकाशन जो आपके अपने जीवन के अनुभवों पर आधारित है। खासकर लन्दन प्रवास के अनन्तर लिखी दैनिक डायरी के पृष्ठों से आपके मन के द्वन्द तथा आर्थिक तंगी ने संवेदनशील मानसिकता पर कैसे दबाव डाले। प्रकाशक रहने के साथ–साथ कई पत्र–पत्रिकाओं में स्वतन्त्र रूप से लेखन कार्य करते रहे। आपने अपने जीवन में कला के लिये विदेश की बहुत यात्राएं की। राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय सम्मान आपको मिले तथा 1982 राजस्थान अकादमी का कलाविद् सम्मान मिला।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थानी चित्रकला – डा0 जयसिंह नीरज
2. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास – डा0 गोपीनाथ शर्मा
3. मोनोग्राफ – श्री परमानन्द चोयल
4. कैटलॉग – 1993 – लेख ए0एस0 यादव समकालीन भारतीय कला – डॉ0 ममता चतुर्वेदी

Copyright © 2017, Dr. Sunita Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.